

भारत की जीडीपी वृद्धि: चुनौतियाँ और अवसर

यह एडिटरियल 30/10/2023 को 'द हट्टि' में प्रकाशित [“An unfolding economic tragedy”](#) लेख पर आधारित है। इसमें तर्क दिया गया है कि भारत कोविड-19 महामारी, सरकार के कुप्रबंधन और संरचनात्मक सुधारों की कमी के कारण गंभीर आर्थिक मंदी का सामना कर रहा है।

प्रलम्ब के लिये:

[सकल घरेलू उत्पाद \(GDP\)](#), [वर्ष 2007-08 का वैश्विक वित्तीय संकट](#), [रुपए के मूल्य में वृद्धि](#), [वस्तु और सेवा कर \(GST\)](#), [नगिम कर में कटौती](#), [दवाला और दवालायपन संहिता](#), [उत्पादन-आधारित प्रोत्साहन योजना \(PLI\)](#), [राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन](#), [श्रम संहिता](#)

मेन्स के लिये:

भारत का विकास पथ, पछिले वर्षों में विकास दर में गिरावट के पीछे के कारण, सकारात्मक कारक जो भारत को मंदी से उबरने में मदद कर सकते हैं, भारत की विकास दर को और अधिक मज़बूत बनाने के लिये आगे की राह

[राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय \(NSO\)](#) ने अगस्त के अंत में घोषणा की कि भारत के [वस्तु और सेवा कर \(GST\)](#) में अप्रैल-जून तमिही में वृद्धि हुई है, जो **7.8% के आकर्षक वार्षिक** वृद्धि दर को दर्शाता है। इस उल्लेखनीय आर्थिक प्रदर्शन ने व्यापक उत्साह उत्पन्न किया है, क्योंकि इसने दुनिया में सबसे तेज़ी से विकास करती प्रमुख अर्थव्यवस्था के रूप में भारत की स्थिति की पुष्टि की है।

अतीत में विकास का प्रक्षेपक

- 2000 के दशक का मध्य:** 2000 के दशक के मध्य में भारत की जीडीपी ने **वार्षिक 9% की वृद्धिदर** की थी जहाँ ऐतिहासिक रूप से उच्च विश्व व्यापार वृद्धि ने सभी अर्थव्यवस्थाओं को वृद्धि का अवसर प्रदान किया था।
 - वित्तीय क्षेत्र-रियल एस्टेट-निर्माण क्षेत्र के एक बुलबुले ने उस विकास को और बढ़ावा दिया जो सतत नहीं रहा।
 - वर्ष 2007-08 का वैश्विक वित्तीय संकट** के बाद विकास दर **6% तक धीमी** हो गई क्योंकि विश्व व्यापार में तेज़ी से गिरावट आई।
- वर्ष 2012-15:** वर्ष 2012-13 तक **सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि लगभग 4.5% तक गिर गई**, लेकिन **जनवरी 2015 में डेटा संशोधन के बाद उस वर्ष और अगले तीन वर्षों** के लिये पुनः विकास में उछाल नज़र आया। उल्लेखनीय है कि तब से सरकार ने फ़ैक्टरी मूल्य के बजाय बाज़ार मूल्य के आधार पर सकल घरेलू उत्पाद की गणना शुरू कर दी है।
 - पद्धति में इस बदलाव से सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर **संख्यात्मक रूप से तो बढ़ गई** लेकिन वास्तविक रूप से इसमें वृद्धि नहीं हुई।
- वर्ष 2016-18:** **नोटबंदी और वस्तु और सेवा कर (GST)** लागू होने के साथ मंदी की शुरुआत हुई और एक बार जब वर्ष **2018 में IL&FS के दवालायपन के बाद वित्तीय क्षेत्र-रियल एस्टेट** का बुलबुला टूट गया तो महामारी से ठीक पूर्व के वर्ष में सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर घटकर **3.9%** रह गई।
 - पूर्व-कोविड वर्ष:** **वस्तुतः पूर्व-कोविड वृद्धि प्रचारित अनुमान की तुलना में गंभीर रूप से कम** रही थी।
 - भारतीय सांख्यिकीय अधिकारियों ने उत्पादन से प्राप्त आय को सकल घरेलू उत्पाद के माप का आधार बनाया।
 - सैद्धांतिक रूप से, भारतीय उत्पादों पर **व्यय (राष्ट्रीय नविसियों और वदेशियों द्वारा) आय के बराबर** होना चाहिये क्योंकि उत्पादकों को आय तभी प्राप्त होती है जब कोई उनका माल खरीदता है।
 - लेकिन **पूर्व-कोविड वर्ष में व्यय की वृद्धि महज 1.9% की दर से हुई।**
- कोविड वर्ष:** औसत निकालने की इस पद्धति से महामारी वर्ष में **सकल घरेलू उत्पाद में 2.9%** की वृद्धि दर की गई।
 - 2000 के दशक के मध्य में **सकल घरेलू उत्पाद की 9%** वृद्धि से महामारी से पूर्व के वर्षों में **महज 3%-4% की वृद्धि भाग** में गंभीर कमज़ोरी को दर्शाती है।
 - यह कमज़ोरी नज़ि कॉर्पोरेट नयित नविश (private corporate fixed investment) में वर्ष 2007-8 में **सकल घरेलू उत्पाद के 17% के शीर्ष स्तर से वर्ष 2019-20 में 11% तक** की भारी गिरावट के रूप में भी प्रकट हुई।
 - नौकरी और आय अर्जन की संभावनाओं से भयभीत घरेलू उपभोक्ताओं की सीमिति करय शक़त को चहिनति करते हुए नज़ि नगिमों ने **नविश में कटौती कर दी, जबकि वदेशियों क्रेताओं में भारतीय वस्तुओं के लिये सीमिति भूख ही नज़र आई।**
- उत्तर-कोविड वर्ष:** **कोविड-19** के बाद के वर्षों में **अर्थव्यवस्था में पुनः उछाल** आया। यह पहले तेज़ी से गरी, फरि इसमें मामूली सुधार हुआ, फरि यह गंभीर रूप से मंद पड़ी और वर्ष 2022 के अंत से इसमें एक **अस्थायी सुधार (dead cat bounce) का अनुभव** हुआ।
 - यह गंभीर रूप से मंद पड़ी और वर्ष 2022 के अंत से इसमें एक **अस्थायी सुधार (dead cat bounce) का अनुभव** हुआ।

- कोवडि चरण का आकलन करने का एकमात्र तरीका यह होगा कि पूरी अवधि में औसत विकास दर का निर्धारण किया जाए।
- हालाँकि यह भी इतना सरल नहीं है। यदाहम कोवडि से पहले की चार तमिहियों की तुलना में नवीनतम चार तमिहियों पर वधिर करे तो वार्षिक वृद्धि दर (आय और व्यय औसत की) 4.2% है।
- यदाहम केवल नवीनतम तमिही की तुलना कोवडि से पहले की तमिही से करे तो वार्षिक वृद्धि महज 2% से कुछ ही अधकि है।
- कोवडि के बाद मांग में कमजोरी का स्पष्ट संकेत वर्ष 2021-22 में नजी कॉरपोरेट नविश में जीडीपी के 10% तक की और गरिवट से भी प्रकट होता है।
- वशिलेषकों का मानना है कविर्ष 2022-23 में भी यह 'एनीमकि' या कमजोर बना रहा है।

पछिले वर्षों में विकास दर में गरिवट के पीछे के प्राथमिक कारण

- **कमजोर बाहरी मांग:** बाहरी मांग आर्थिक विकास का एक और महत्त्वपूर्ण स्रोत है, क्योंकि यह वशिव के साथ अर्थव्यवस्था की प्रतस्पर्द्धात्मकता और एकीकरण को दर्शाती है। हालाँकि वरि्ष 2013-14 से भारत के नरियात-जीडीपी अनुपात (exports to GDP ratio) में गरिवट आ रही है। वर्ष 2011-12 में यह अनुपात 25% था जो वर्ष 2019-20 तक घटकर 18% रह गया।
 - इस गरिवट के लिये वभिनिन कारणों को ज़मिमेदार ठहराया जा सकता है, जैसे कि वैश्विक विकास में मंदी, रुपए के मूल्य में वृद्धि, बाज़ार हसिसेदारी में कमी और व्यापार बाधाएँ।
- **नमिन पूंजी नविश:** भारत की नविश दर वर्ष 2010 में सकल घरेलू उत्पाद के 39.8% से गरिकर वर्ष 2021 में अनुमानति रूप से 29.3% रह गई। यह अर्थव्यवस्था में आत्मवशिवास और मांग की कमी के साथ-साथ भूमि अधग्रहण, पर्यावरण मंजूरी और ऋण उपलब्धता जैसी संरचनात्मक बाधाओं को दर्शाता है।
- **नीतगित अनशिचतिता और झटके:** सरकार ने कई नीतगित बदलाव और सुधार लागू किये हैं जनिका अर्थव्यवस्था पर मशिरति प्रभाव पड़ा है। इनमें वमिद्रीकरण/नोटबंदी, वसतु और सेवा कर (GST), कॉरपोरेट टैक्स में कटौती, दवालाल और दवालियापान संहति आदि शामिल हैं।
 - हालाँकि इनमें से कुछ के दीर्घकालिक लाभ प्राप्त हो सकते हैं, लेकनि उन्होंने व्यवसायों और उपभोक्ताओं के लिये अल्पकालिक व्यवधान एवं अनशिचतिताएँ भी पैदा कीं।
- **बढ़ती असमानता और गरीबी:** भारत की आर्थिक वृद्धि समावेशी या समतामूलक नहीं रही है। आबादी के शीर्ष 10% की आय हसिसेदारी वर्ष 1980 में 31% से बढ़कर वर्ष 2016 में 56% हो गई, जबकि निचिले 50% की हसिसेदारी 24% से गरिकर 15% रह गई। वर्ष 2011 के बाद से गरीबी दर भी लगभग 20% पर गतहीन बनी हुई है।
- **वनिरिमाण कषेत्तर का कमजोर प्रदर्शन:** वनिरिमाण आर्थिक विकास के लिये एक महत्त्वपूर्ण कषेत्तर है, क्योंकि यह मूल्यवर्द्धन, नरियात और रोजगार में योगदान करता है। लेकनि भारत का वनिरिमाण कषेत्तर पछिले एक दशक से कमजोर प्रदर्शन कर रहा है, जहवर्ष 2019-20 में इसके वास्तविक सकल मूल्यवर्द्धति (GVA) में लगभग 3% की गरिवट आई।
 - इस गरिवट के लिये वभिनिन कारणों को ज़मिमेदार ठहराया जा सकता है, जैसे नोटबंदी, GST लागू किया जाना, वैश्विक व्यापार तनाव और प्रतस्पर्द्धा की कमी।
- **उपभोग में गरिवट:** उपभोग जीडीपी का एक अन्य प्रमुख घटक है, क्योंकि यह लोगों की करय शक्ति और जीवन स्तर को दर्शाता है। हालाँकि, भारत का उपभोग व्यय (जीडीपी के हसिसे के रूप में) भी वर्ष 2019-20 में 60.5% से गरिकर वर्ष 2021-22 में 57.5% रह गया।
 - इस गरिवट के लिये नमिन आय वृद्धि, उच्च मुद्रासफीति, ग्रामीण संकट, रोजगार हानि और ऋण उपलब्धता की कमी जैसे वभिनिन कारणों को ज़मिमेदार ठहराया जा सकता है।
- **बचत में कमी:** उपभोग को बनाए रखने के लिये परिवारों ने अपनी बचत दरों को वर्ष 2019-20 में सकल घरेलू उत्पाद के 11.9% से घटाकर 5.1% कर लिया है। क्रेडिट कार्ड के लिये पात्र लोगों पर ऋण का चतिजनक स्तर बढ़ता जा रहा है।

वे कौन-से सकारात्मक कारक हैं जो भारत को इस मंदी से उबरने में मदद कर सकते हैं?

- एक बड़ी और युवा आबादी: रपिरटों के अनुसार, भारत की आबादी 1.4 बलियन से अधकि है, जसिमें 40% से अधकि लोग 25 वर्ष से कम आयु के हैं। यह आर्थिक विकास के लिये एक बड़ा जनसांख्यिकीय लाभांश प्रदान करता है, क्योंकि यह एक बड़े एवं बढ़ते कार्यबल और उपभोक्ता आधार को इंगति करता है।
 - हालाँकि इसके लिये शकिषा, स्वास्थय और कौशल जैसे मानव पूंजी विकास में पर्याप्त नविश की भी आवश्यकता है।
- एक प्रत्यासथी और वविधि अर्थव्यवस्था: भारत की एक वविधि अर्थव्यवस्था है जो वभिनिन सेक्टर और कषेत्तर (region) तक वसितुत है। यह सेक्टर-वशिषिट या कषेत्तर-वशिषिट झटकों के वरिद्ध सुरक्षा प्रदान करता है और व्यापक आर्थिक स्थिरता (macroeconomic stability) बनाए रखने में मदद करता है।
 - इसके अलावा, भारत ने अतीत में वभिनिन संकटों, जैसे कविर्ष 2007-08 का वैश्विक वत्तितीय संकट और 2020-21 की कोवडि-19 महामारी, से नपिटने में प्रत्यासथता का प्रदर्शन किया है।
- एक सुधार-उन्मुख और सकरयि सरकार: भारत सरकार उन सुधारों और नीतियों को आगे बढ़ाने के लिये प्रतबिद्ध है जो आर्थिक वृद्धि एवं विकास को बढ़ा सकते हैं।
 - सरकार द्वारा हाल ही में की गई कुछ पहलों में आत्मनरिभर भारत पैकेज, उत्पादन-आधारति प्रोत्साहन योजना (PLI), राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन और श्रम संहति वधियक शामिल हैं।
 - हालाँकि इन पहलों के लिये प्रभावी कार्यान्वयन और वभिनिन हतिधारकों के बीच समन्वयन की भी आवश्यकता है।

भारत की विकास दर को और अधकि सुदृढ़ करने के लिये क्या करने की आवश्यकता है?

- **नविश और उपभोग को बढ़ावा देना:** ये घरेलू मांग के दो मुख्य चालक हैं, जो भारत की जीडीपी में लगभग 70% हसिसेदारी रखते हैं।
 - नविश बढ़ाने के लिये सरकार उन सुधारों को लागू करना जारी रख सकती है जो नीतगित अनशिचतिता, नयामक बाधाओं, बयाज दरों और

'बैंड लोन्स' को कम करते हैं।

- उपभोग बढ़ाने के लिये सरकार आय वृद्धि, मुद्रास्फीति नियंत्रण, ग्रामीण विकास, रोज़गार सृजन और ऋण उपलब्धता का समर्थन कर सकती है।

- **वनिर्माण और नरियात को बढ़ाना:** ये मूल्यवर्द्धन, रोज़गार और बाहरी मांग के प्रमुख स्रोत हैं, जो भारत को अपनी अर्थव्यवस्था में विविधता लाने और वैश्विक बाज़ार के साथ एकीकृत होने में मदद कर सकते हैं।
 - वनिर्माण और नरियात में सुधार के लिये सरकार आत्मनिर्भर भारत पैकेज, प्रोडक्शन-लकिड प्रोत्साहन योजना और राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन जैसी पहलों को लागू करना जारी रख सकती है।
 - **सरकार मुद्रा मूल्य वृद्धि (currency appreciation)**, बाज़ार हस्सेदारी की हानि और व्यापार बाधाओं जैसे मुद्दों को भी संबोधित कर सकती है।
- **मानव पूंजी और सामाजिक सेवाओं में निवेश करना:** ये भारत की बड़ी और युवा आबादी के जीवन स्तर एवं उत्पादकता में सुधार के लिये आवश्यक कारक हैं।
 - सरकार मानव पूंजी और सामाजिक सेवाओं में निवेश करने के लिये शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल, पोषण, जल, स्वच्छता, ऊर्जा, आवास एवं स्वास्थ्य देखभाल को बढ़ाने वाले कार्यक्रमों को लागू करना जारी रख सकती है।
 - सरकार यह भी सुनिश्चित कर सकती है कि ये कार्यक्रम उन लोगों तक पहुँच सकें जिन्हें वास्तव में उनकी आवश्यकता है और उन्हें कुशलतापूर्वक वितरित किया जाए।
- **व्यापक आर्थिक स्थिरता और प्रत्यास्थता बनाए रखना:** आर्थिक विकास को बनाए रखने और विभिन्न झटकों एवं अनिश्चितताओं से निपटने के लिये ये आवश्यक शर्तें हैं।
 - व्यापक आर्थिक स्थिरता और प्रत्यास्थता बनाए रखने के लिये, सरकार ऐसी विविधपूर्ण राजकोषीय और मौद्रिक नीतियों को आगे बढ़ाना जारी रख सकती है जो विकास एवं मुद्रास्फीतिके उद्देश्यों को संतुलित करती हैं।

अभ्यास प्रश्न: हाल के वर्षों में भारत की आर्थिक वृद्धि में उल्लेखनीय उतार-चढ़ाव देखा गया है। सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर में गिरावट के लिये ज़िम्मेदार प्रमुख कारकों का विश्लेषण कीजिये और वे उपाय सुझाइये जो भारत सरकार को अर्थव्यवस्था को फरि से जीवंत करने के लिये आपनाने चाहिये।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQs)

??????:

प्रश्न. नरिपेक्ष तथा प्रतव्यक्तिवास्तविक GNP में वृद्धिआर्थिक विकास की ऊँची स्तर का संकेत नहीं करती, यदि: (2018)

- औद्योगिक उत्पादन कृषिउत्पादन के साथ-साथ बढ़ने में वफिल रह जाता है।
- कृषि उत्पादन औद्योगिक उत्पादन के साथ-साथ बढ़ने में वफिल रह जाता है।
- नरिधनता और बेरोज़गारी में वृद्धि होती है।
- नरियात की अपेक्षा आयात तेज़ी से बढ़ता है।

उत्तर: (c)

प्रश्न. कसिी दयिे गए वर्ष में भारत के कुछ राज्यों में आधिकारिक गरीबी रेखाएँ अन्य राज्यों की तुलना में उच्चतर हैं क्योंकि: (2019)

- गरीबी की दर अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग होती है।
- कीमत- स्तर अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग होता है।
- सकल राज्य उत्पाद अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग होता है।
- सार्वजनिक वितरण की गुणवत्ता अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग होती है।

उत्तर: (b)

??????:

प्रश्न. संभाव्य सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) को परभाषति कीजिये और उसके नरिधारकों की व्याख्या कीजिये। वे कौन से कारक हैं जो भारत को अपनी संभाव्य जी.डी.पी. को साकार करने से रोकते हैं? (2020)

प्रश्न. भारत की सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) के वर्ष 2015 के पूर्व तथा वर्ष 2015 के बाद परकिलन वधि में अंतर की व्याख्या कीजिये। (2021)

